पूर्वी दिल्ली की नहरों की सफाई एवं पुनर्वास के लिए विज्ञान-आधारित परियोजना

सु-धारा परियोजना

प्रकाशन क्रमांक 001

संवाद

ई–मेल : sudhara@vertiver.com फोन नंबर : 9599507702

दिनांक–17.11.2019

सु–धारा परियोजना, प्रधानमंत्री विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सलाहकार परिषद के अंतर्गत भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय के द्वारा एक नई पहल है जो हमारे 52–क्यूसेक ड्रेन की सफाई पर केंद्रित है । सु–धारा के तहत हमारे समुदाय में कचरे के प्रबंधन के लिए उचित प्रणालियों पर अनुसंधान और जागरूकता पर काम शुरू किया जा रहा है। अनुसंधान सर्वेक्षण के परिणाम के आधार पर वैज्ञानिक तरीकों से कचरा प्रबंधन के लिए नई प्रणालियाँ शुरू और लागू करने का प्लान बनाया जाएगा जो हमें अपने आस–पड़ोस को लंबे समय तक साफ रखने के लिए और अपने कचरे के प्रबंधन के लिए एक आदर्श मॉडल बनाने में मदद करेंगे। आप इस परियोजना को अपना बहुमूल्य समर्थन देकर अपने आस–पड़ोस का ही नहीं बल्कि पूरे देश में स्वच्छता के लक्ष्य को पूरा कर रहे हैं।

विकास का आधार,
स्वच्छता में सुधार ।

क्या आप जानते है ?

2500 टन कचरा प्रति वर्ष 52 क्यूसेक नाले में जमा होता है

850 मिलियन गैलन मल 21 नालों से प्रति दिन यमुना में जाता है।

दिल्ली के **3** भराव–क्षेत्र गाजीपुर, ओखला और भलस्वा, कचरे के पहाड़ बन चुके हैं।

500 ग्राम से ज्यादा कचरा भारत का हर वासी प्रति दिन उत्पन्न करता है।

9000 मैट्रिक टन कचरा भारत में रोज उत्पन्न होता है।

500 एकड़ में फैला गाजीपुर विश्व का 7 वाँ सबसे बड़ा भराव क्षेत्र है।

कचरे के अनुचित प्रबंधन के तरीके वायु, जल एवं भूमि और मिटटी का प्रदूषण बढ़ाते जा रहे हैं। प्लास्टिक और अन्य कचरे से सम्बंधित तत्त्व हमारी पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय कर, प्राकृतिक संतुलन को चुनौती दे रहे हैं और आने वाली पीढ़ी के लिए भी एक भारी बोझ बनते जा रहे हैं। *तो आइए हम सब मिलकर स्वच्छता के इस महत्व को समझें और अपनी आगे आने वाली पीढ़ी के लिए एक बेहतर पर्यावरण के निर्माण में अपना योगदान करें।*

ई–मेल : sudhara@vertiver.com | फोन नंबर : 9599507702

प्रत्येक इंसान कई ऐसे छोटे–छोटे कदम ले सकता है जो हमारी पृथ्वी के स्वास्थ्य को ही नहीं बल्कि हमारे व्यक्तिगत स्वास्थ्य को भी सुधार सकता है नीचे दर्शाये गए ऐसे ही कुछ कार्य हैं जिन्हें आप अपनाकर कचरे को कम करने के साथ – साथ हमारे पर्यावरण को बेहतर बनाने में योगदान कर सकते हैं:

पानी का उपयोग सीमित रखें और अगर हो सके तो बारिश के पानी का संग्रहण जरूर करें– नहाते समय और सफाई करते समय पानी का उपयोग बहुत सावधानी से करें– पानी एक अनमोल संसाधन है जिसका संरक्षण हम सबका कर्तव्य है।

कचरे को कचरे के डब्बे में ही डालें– कचरे को रोड या घर के बाहर ढेर लगाने से उसे उठाना तो मुश्किल होता ही है ऊपर से वो बीमारियों की जड़ भी बन जाता है।

घर से अपनी पानी की बोतल लेकर चलें ताकि प्लास्टिक की बोतलों का कम से कम उपयोग हो– हालाँकि प्लास्टिक की बोतल रीसायकल हो सकती हैं, परन्तु लोग अक्सर उन्हें कचरे में फेंक देतें है जहाँ से वो नष्ट होकर जल और मिटटी में मिल कर बहुत नुकसान पहुंचाती है।

कूलर या कहीं और पानी ना इक्कठा होने दें– इससे डेंगू जैसी बीमारियां उत्पन्न होती हैं।

ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएँ– पौधे लगाने से सुंदरता तो बढ़ती ही है उसके साथ–साथ हवा भी स्वच्छ होती है।

सब्जी आदि की खरीददारी करते समय हमेशा अपना झोला साथ लेकर चलें– इससे प्लास्टिक की पन्नियों के बढ़ते हुए ढेर (जो कि जीव जंतुओं और हमारे स्वास्थ के लिए बेहद हानिकारक हैं) को रोका जा सकता है।

कूड़ा कभी भी न जलाएं– इससे बहुत हानिकारक गैसें उत्पन्न होती हैं जो शरीर में कई बीमारियों की जड़ बनती हैं।

स्वच्छता की तरफ एक और कदम बढ़ाएं– हमारे घर, आस–पड़ोस, शहर और देश को स्वच्छ बनाने में हम सब की भागीदारी आवश्यक है, तो आइए आज ही हम सब सुधारा के साथ जुड़कर सुधारा दूत बनें और अपने आस–पड़ोस को इस कचरे से मुक्त करें।

सु–धारा परियोजना का प्रारंभ : 8 अक्टूबर, 2019

सु–धारा परियोजना का प्रारंभ इस साल दशहरा के अवसर पर न्यू–जाफराबाद के तिकोना पार्क में दशहरा मेले में किया गया। इस मेले में सु–धारा टीम ने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से लगभग तीन हजार लोगों और बच्चों के साथ कचरा प्रबंधन पर संवाद किया। यह कार्यक्रम परियोजना के परिचय के साथ शुरू हुआ, जिसके बाद एक छोटा मनोरंजक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। इस नुक्कड़ नाटक ने सामुदायिक सदस्यों को आकर्षक गीतों और संवादों से मनोरंजन के साथ

साथ शिक्षा दी। ईडीएमसी के एक अधिकारी ने परियोजना की सफलता के लिए सामुदायिक भागीदारी के महत्वों को बताते हुए एक छोटा भाषण दिया। उन्होंने नाले में मौजूद कचरे से जुड़े स्वास्थ्य संबंधी खतरों पर भी चर्चा की। इसके बाद एक स्थानीय निवासी मनीष जी (आरडब्ल्यूए के अध्यक्ष) ने अपने इलाके में कचरा प्रबंधन पर बड़े पैमाने पर काम किया है, उन्होंने सु–धारा परियोजना को अपना समर्थन दिया। उन्होंने समुदाय के सदस्यों को जिम्मेदार नागरिक बनने और अपने आसपास की सफाई सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित किया और नाले के आसपास रहने वालों को परियोजना का समर्थन करने का आग्रह किया। इस शाम का सबसे आकर्षक पहलू था हमारा **सु–धारा दूत।** सु–धारा दूत **'मैस्कॉट'** को परियोजना के प्रतिनिधित्व के रूप में विकसित किया गया था और इस मैस्कॉट के कट–आउट को फोटो के अवसर के रूप में मेले के प्रवेश द्वार पर रखा था। लोगों ने सक्रिय रूप से इस मैस्कॉट के साथ जुड़ा और परियोजना की ब्रांड पहचान को अपनाया। शाम भर, बच्चे और बड़ों दोनों ने अपने क्षेत्र के स्वच्छता चैंपियन होने के विचार से खुद को पहचाना और फोटा–ऑप जोन में खुद की तस्वीरें लीं। शाम भर कई समुदाय के सदस्यों ने आगे आकर सु–धारा टीम से बात की और परियोजना के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया।

नुक्कड़ नाटक ने गीले और सूखे कचरे के अलगाव, पुनर्चक्रण, खाद बनाने के विकल्प, कचरे को नहर में फेंकने के स्वास्थ्य प्रभावों और 52–क्यूसेक ड्रेन के पुनर्वास के लिए सामुदायिक प्रयासों के महत्व के विषयों पर जागरूकता फैलाई ।

अगर आप आस–पड़ोस में स्वच्छता से सम्बंधित काम कर रहे हैं तो आपके प्रयासों को हम इस सुधारा संवाद के अगले प्रकाशन में उजागर करेंगे। कृपया आप ई–मेल या फ़ोन नम्बर के माध्यम से सु–धारा की टीम को संपर्क करें। **ई–मेल :** sudhara@vertiver.com | **फोन नंबर :** 9599507702

गन्दगी से परेशान हुआ, पर्यावरण गया रूठ,
सु–धारा में सहयोग करें, बनें स्वच्छता दूत।

Content and Design by Vertiver